

## व्यञ्जन सन्धि:

व्यञ्जन सन्धि के निम्नलिखित भेद हैं—

### व्यञ्जन सन्धि

परसवर्ण छत्व तुगागम अनुस्वार (म् को ँ) जश्त्व प्रथम वर्ण को पञ्चम वर्ण में परिवर्तन क्योंकि व्यंजनों के रूपों में अनेक परिवर्तन होते हैं, अतः व्यञ्जन सन्धि के अनेक भेद भी हैं। अब क्रमशः इन्हीं का वर्णन किया जाएगा।

#### (i) परसवर्ण सन्धि: (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः, पा०अ० ४/५/५७)

अपदान्त अनुस्वार को उसी वर्ण का पंचम वर्ण बनाने का नियम—

अपदान्त अनुस्वार के बाद किसी वर्ण का कोई भी व्यंजन हो, तो अनुस्वार को उसी वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे—

|                                 |                                       |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| गुम् + फितः = गुम्फितः (ङु-ः.५) | सम् + धिः = सन्धिः (धु-ः.५)           |
| दिवम् + गतः = दिवङ्गतः (दि-ः.५) | बिम् + दुः = बिन्दुः (दि-ः.५)         |
| कुम् + ठितः = कुम्ठितः (कु-ः.५) | चम् + चलः = चञ्चलः (च-ः.५)            |
| कम् + ठः = कण्ठः (क-ः.५)        | अम् + कः = अङ्कः (अ-ः.५)              |
| अम् + कितः = अङ्कितः (अ-ः.५)    | प्रेम् + खणम् = प्रेङ्खणम् (प्रे-ः.५) |

#### (ii) छत्व सन्धि: (शश्लोपे ४.५.६.३)

'तवर्ग' को 'चवर्ग' तथा 'श' को विकल्प से 'छ' बनाने का नियम—

यदि किसी भी वर्ण के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण के बाद 'श' होने पर और उसके बाद में कोई स्वर या ह, य, व, र में से कोई वर्ण होने पर 'श' को विकल्प से 'छ' हो जाता है और 'तवर्ग' को 'चवर्ग' हो जाता है।

|   |   |
|---|---|
| एतत् + श्रुत्वा = एतच्छ्रुत्वा, एतच्छ्रुत्वा,         | तत् + श्लोकेन = तच्छ्लोकेन, तच्छ्लोकेन          |
| तत् + शिवम् = तच्छिवम्, तच्छिवम्,                     | तत् + शृणोति = तच्छृणोति, तच्छृणोति             |
| त्यागात् + शान्तिः = त्यागाच्छान्तिः, त्यागाच्छान्तिः | सत् + शास्त्रम् = सत्शास्त्रम्, सत्शास्त्रम्    |
| त्यागात् + शेते = त्यागाच्छेते, त्यागाच्छेते:         | संगात् + शेते = संगच्छेते, संगच्छेते            |
| शीतलात् + शीतलम् = शीतलाच्छीतलम्, शीतलाच्छीतलम्       | बलात् + श्रेष्ठः = बलाच्छ्रेष्ठः, बलाच्छ्रेष्ठः |

#### (iii) तुकागमः - 'च' वर्णस्य आगमः

$$\text{ह्रस्वस्वरः} + \text{द्यु} = \text{ह्रस्वस्वरः} + \text{च} + \text{द्यु}$$

$$\text{दीर्घस्वरः} + \text{द्यु} = \text{दीर्घस्वरः} + \text{च्यु} + \text{द्यु}$$

#### (iv) छु से पहले 'च' का आगम (उपे ६.१.७.३) (तुकागम)

जब ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो, तो 'तुक्' का आगम होता है। 'तुक्' का 'त' शेष रहता है। श्चुत्व सन्धि से 'त' को 'च' हो जाता है। जैसे—

|   |
|---|
| परि + छिदः = परि + तुक्(च) + छिदः = परिच्छिदः       |
| अनु + छेदः = अनु + तुक्(च) + छेदः = अनुच्छेदः       |
| वृक्ष + छाया = वृक्ष + तुक्(च) + छाया = वृक्षच्छाया |
| स्व + छन्दः = स्व + तुक्(च) + छन्दः = स्वच्छन्दः    |
| सन्धि + छेदः = सन्धि + तुक्(च) + छेदः = सन्धिच्छेदः |

जब पहले शब्द के अन्त में दीर्घ स्वर हो और उसके बाद 'छ' हो, तो 'छ' से पहले 'च' को जोड़कर 'च्यु' बना दिया जाता है।

|                              |
|------------------------------|
| माता + छाया = माताच्छाया     |
| लीला + छत्रम् = लीलाच्छत्रम् |

|                                |
|--------------------------------|
| लता + छाया = लताच्छाया         |
| लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया |